मंगलयानः क्या प्रत्येक व्यक्ति के 4 रुपए चुराए

डॉ. डी. बालसुब्रमण्यन

भारतीय अंतरिक्ष मिशन द्वारा पिछले दिनों मंगल ग्रह की ओर यात्रा करने के लिए मंगलयान को भेजा गया है। कहा जा रहा है कि यह प्रक्षेपण बिलकुल शास्त्रोक्त ढंग से त्रुटिरहित था। 24 सितम्बर 2014 के दिन लाल ग्रह की कक्षा में पहुंचने तक के इन 300 दिनों में यह 68 करोड़ कि.मी. की दूरी तय करेगा। वहां पहुंचकर यह यान मंगल ग्रह की सतह का विश्लेषण करेगा कि क्या वहां मीथेन या कोई ऐसी गैस मौजूद है। ऐसा माना जाता है कि इनकी उपस्थिति जीवन की संभावना के संकेत दे सकती है।

यह भारत के इतिहास में बहुत गर्व की बात है कि केवल 50 साल पहले शुरू हुए अंतरिक्ष प्रोग्राम ने इतनी बड़ी उपलब्धि हासिल की है। इसे एक राष्ट्र की जीवटता भी कह सकते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि मंगलयान प्रयोग के साथ भारत तकनीकी दृष्टि से उन्नत राष्ट्र की श्रेणी में आ जाएगा।

अलबत्ता, देश में कुछ लोग सवाल उठा रहे हैं कि इसका कोई फायदा होगा या नहीं। या यह व्यर्थ का बवंडर है और मंगलयान पर व्यय 460 करोड़ रुपए करोड़ों भूखे लोगों का पेट भरने में काम आ सकते थे। भारत घोर विरोधाभासों का देश है। यहां आधे से ज़्यादा लोग 2 डॉलर प्रतिदिन से कम पर जीते हैं। और उनमें से भी कई लोग तो प्रतिदिन मात्र 30 रुपए से कम में गुज़ारा चलाते हैं।

इन सब आलोचनाओं के चलते, अंतरिक्ष आयोग के अध्यक्ष डॉ. के. राधाकृष्णन ने जवाब दिया है कि इसमें खर्च हुई एक-एक पाई सब लोगों के भले के लिए है। इसे एक परिप्रेक्ष्य में रखने के लिए उन्होंने कहा कि मंगलयान की कीमत प्रत्येक भारतीय के लिए मात्र 4 रुपए है।

आम आदमी को इस चार रुपए से क्या हासिल होगा? या चालीस या चार सौ से? काफी कुछ। याद कीजिए कि कैसे भारतीय उपग्रह हमें मौसम की सही जानकारी समय पर देते हैं। मछुआरों, तटीय किसानों को समुद्री ज्वार और मछली के झुंड की जानकारी देते हैं, तट के दूर और पास के जहाज़ों की जानकारी देते हैं, रेडियो और टीवी तरंगों को चारों ओर पहुंचाते हैं, और करोड़ों लोगों की जान बचाने में मदद करते हैं।

हाल में आए तूफान फेलिन से लाखों लोगों की मौत हो सकती थी लेकिन केवल 44 जानें ही गईं और इसके लिए हमें अपने अंतरिक्ष कार्यक्रम को धन्यवाद देना चाहिए क्योंकि उसके द्वारा मिली पूर्व जानकारी की मदद से ही यह हो सका। जब हमारे पास ये सुविधाएं नहीं थी तब चक्रवातों की जानकारी के अभाव में कई हज़ारों लोगों की जानें गई हैं।

यह तो सही है, लेकिन फिर भी सवाल उठता है कि मंगल यात्रा क्यों? यहीं विकास का विचार महत्वपूर्ण हो जाता है। आज भी भारत एक विकासशील देश के रूप में ही जाना जाता है। एक समय पर कहा जाता था कि यह 'जहाज़ से मुंह' की स्थिति में था; इशारा आयात पर

निर्भरता की ओर था।

तो विकास कैसे होता है? और कब कोई देश विकसित कहलाता है?

विकास के कई घटक हैं: पर्याप्त खाना, कपड़ा और लोगों को रहने के लिए घर, समुचित शिक्षा और संस्कृति, अच्छा स्वास्थ्य, अच्छा वातावरण, सभी के लिए समान अवसर, शत्रुओं से रक्षा करने की क्षमता, आर्थिक स्थिरता और वृद्धि, और अच्छा शासन। ये सब मिलकर राष्ट्र के प्रति एक गर्व की भावना पैदा करते हैं। उपरोक्त घटकों में से किसी को भी देखें, तो टेक्नॉलॉजी हरेक में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। टेक्नॉलॉजी तार्किक, वैज्ञानिक और तर्कवादी सोच और उसके उपयोग से उभरती है। टेक्नॉलॉजी की एक बड़ी खूबी यह है कि इसे बड़े पैमाने पर लागू किया जा सकता है। जब टेक्नॉलॉजी का फैलाव होता है, मांग बढ़ती है और इस्तेमाल होता है तब यह सस्ती हो जाती है। तब यह पूरे राष्ट्र को सुविधा और तरक्की दे सकती है। प्रोद्योगिकी का शुक्र है कि हम 'जहाज़ से मुंह' की स्थिति से निकलकर 'गोदाम से जहाज़' की स्थिति में पहुंचे हैं। हमने देश को चेचक और पोलियो से छुटकारा दिलाया है और बचपन में होने वाली बीमारियों से बच्चों को बचाने के लिए सभी बच्चों का टीकाकरण किया जा रहा है।

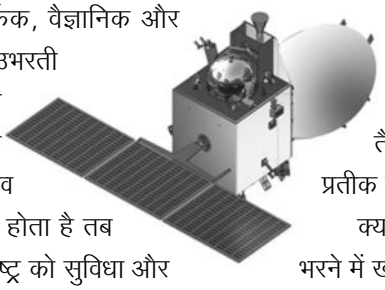

इस नज़रिए से देखें तो मंगलयान प्रासंगिक लगता है। 460 करोड़ की लागत के कुछ सार्थक प्रभाव नज़र आते हैं। हम नवीनतम टेक्नॉलॉजी इस्तेमाल कर रहे हैं, वास्तव में नई टेक्नॉलॉजी बना रहे हैं, और किफायती दामों पर। युरोप या अमेरिका का मंगल मिशन इससे तीन गुना ज़्यादा महंगा होगा। और डिज़ाइन, निर्माण, चेकिंग और सेटिंग सभी कुछ भारतीय इंजीनियर्स द्वारा किया गया है। केवल कुछ महत्वपूर्ण घटक आयात किए गए हैं। इस तरह हम आत्मनिर्भर बने हैं और अपनी क्षमताओं का विकास किया है। मंगल की यात्रा से हमें यह आत्मविश्वास हासिल हुआ है कि हम इस टेक्नॉलॉजी का उपयोग कर सकते हैं और ज़मीनी उपयोग के लिए नवाचार कर सकते हैं। यह हमारे लिए व्यापार के रास्ते खोलेगा (याद कीजिए हम अपने सेटेलाइट से दूसरे देशों के उपकरणों वगैरह को अंतरिक्ष में पहुंचाते हैं।)। यह युवाओं की कल्पना को पंख लगाएगा (18-21 साल के युवाओं ने फेसबुक पर 2 लाख से ज़्यादा लाइक भेजे थे)। मंगलयान एक साधन है युवाओं को विज्ञान की ओर आकर्षित करने का।

यानी यह कोई खर्च नहीं बल्कि भविष्य के लिए निवेश है। आज मंगल है, कल और बड़ी चुनौती होगी। क्या भारत को तैयार नहीं रहना चाहिए? मंगल तो एक प्रतीक है।

क्या 460 करोड़ रुपए भूखे लोगों का पेट भरने में खर्च नहीं करना चाहिए? ज़्यादा बड़े चित्र को देखिए। भारत का 2013-14 का बजट 16,65,297 करोड़ रुपए है। यह प्रति व्यक्ति 14,500 बैठता है। हमने कृषि के लिए 27,049 करोड़ (प्रति व्यक्ति 235 रुपए) बजट रखा है। साथ ही, 33,000 करोड़ (280 रुपए प्रति व्यक्ति) मनरेगा के लिए रखा है। इस प्रकार गरीबों की मदद के लिए धन आवंटित किया गया है (मंगलयान ने इसमें से एक रुपया भी नहीं लिया है)। इन सब कार्यक्रमों में अकुशल शासन-प्रशासन के चलते कई बड़े-बड़े घोटाले हैं। यदि हम इनमें कसावट लाएं, तो गरीबों को खाना खिलाने सम्बंधी शिकायतें कम होंगी या शायद खत्म ही हो जाएं। इसमें भी बिचौलियों को हटाने वगैरह में टेक्नॉलॉजी मददगार हो सकती है। इसकी तुलना में मंगलयान पर 460 करोड़ या 4 रुपए प्रति व्यक्ति (एक या दो प्याज़ के बराबर) की लागत तो महज़ चिल्लर है। ***(स्रोत फीचर्स)***

स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

सदस्यता शुल्क एकलव्य, भोपाल के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से भेजें।

पता - ***ई-10,शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016***

वार्षिक सदस्यता
व्यक्तिगत 150 रुपए
संस्थागत 300 रुपए